# 4. सामन्त राजा और अधिपति राजा

## (सन् 400 से सन् 1200 की बात)

### कई सारे युद्ध

सन् 400 और सन् 1200 के बीच के समय में भारत के हर क्षेत्र में बहुत सारे राजा हो गए थे। इन राजाओं के बीच आए दिन युद्ध हुआ करता था। जो राजा छोटे थे वे दूसरे छोटे राजाओं को हरा कर बड़ा बनना चाहते थे। और जो राजा बड़े थे वे दूसरे बड़े राजाओं को झुकाना चाहते थे। जगह-जगह युद्ध का डंका बजने लगा। अपने देश के इतिहास में पहली बार हर जगह इतनी सारी लड़ाईयां हुई होंगी। युद्ध भूमि में हज़ारों लाखों सैनिक मारे जाते थे। पर इसके अलावा, विजयी सेनाएं हारे हुए राज्य के गांवों-शहरों को लूटती और जलाती जाती थीं। युद्ध से चारों ओर तबाही मचती रहती। गांवों व शहरों के साधारण लोग कई कष्ट झेलते थे।

युद्ध से चारों ओर तबाही मचती रहती थी

### हारे और जीते राजाओं का रिश्ता

आओ यह जानें कि राजा, जिनके चाहने पर युद्ध लड़े जाते थे- वे जीतने पर क्या-क्या लाभ पाते थे, और हारने पर क्या-क्या नुक्सान उन्हें भुगतना पड़ता था। तुम सोच रहे होगे कि जीतने वाले राजा को फायदा ही फायदा होता होगा। वह हारे हुए राजा के राज्य को अपने राज्य में मिला लेता होगा। वहां अपने अधिकारियों को भेजकर लगान इकट्ठा करवाता होगा। उसके पास इस तरह से बहुत धन जमा हो जाता होगा। पर आश्चर्य की बात है कि उन दिनों विजयी राजा हमेशा ऐसा नहीं करते थे। वे पराजित राजा का राज्य अपने राज्य में नहीं मिलाते थे। आमतौर पर वे हारे हुए राजा को उसका राज्य लौटा देते थे।

*यह नीति तुमने किस राजा को अपनाते हुए पाया था?*

सन् 400 से 1000 के बीच के समय में युद्ध में हारे हुए राजाओं को आमतौर पर अपने राज्य वापिस मिल जाते थे। पर, बदले में उन्हें कुछ शर्तें माननी पड़ती थीं। सबसे पहली बात, पराजित राजा को यह स्वीकार करना पड़ता था कि विजयी राजा उसका स्वामी है और वह विजयी राजा के चरणों में रहने वाला सेवक है। विजयी राजा अधिपति कहलाता था।

पराजित राजा उसका सामन्त कहलाता था। यह दिखाने के लिए कि वह किसी राजा का सामन्त है, पराजित राजा को अपने नाम के आगे यह बात लिखनी पड़ती थी।

## उपाधियां

सामन्त राजा कैसे यह बात अपने नाम के आगे लिखते थे इसका एक उदाहरण पढ़ो। इस उदाहरण में सामन्त राजा का नाम क्षितिपाल है। क्षितिपाल भोजदेव नाम के राजा का सामन्त है। इनके नाम के पहले जो कुछ लिखा है वो इन राजाओं की उपाधि है।

*उपाधि का अर्थ गुरुजी से समझो। उपाधि के कुछ उदाहरण अपने आस पास की बातों में से जानो।*

आओ अब राजा क्षितिपाल और राजा भोजदेव की उपाधियों के उदाहरण पढ़ो-

*"परमभट्टारक परमेश्वर महाराजाधिराज श्री भोजदेव के चरणों में रहने वाले महासामन्त महाराजाधिराज श्री क्षितिपाल का शासन था।"*

*भोजदेव की उपाधि क्या थी- उसके नीचे रेखा खींचो।*

*क्षितिपाल की उपाधि क्या थी- उसके नीचे रेखा खींचो।*

*इन दोनों राजाओं की उपाधियों से कैसे पता चलता है कि कौन अधिपति राजा है और कौन सामन्त राजा है?*

उपाधियों में फर्क रखना बहुत महत्वपूर्ण बात समझी जाती थी। सामन्त राजा आमतौर पर अपने लिए छोटी उपाधि लगाते थे और अधिपति राजा के नाम के आगे लंबी चौड़ी उपाधि लगाई जाती थी। इसी से पता चलता था कि कौन सा राजा ज़्यादा शक्तिशाली माना जाता था। सामन्त राजा अपने राज्य में जब कोई हुकुम जारी करता तो वह अपनी घोषणा में यह ज़रूर कहता कि वह किस अधिपति राजा का सेवक है।

*तुमने शुरू से अभी तक जो अंश पढ़ा उसमें चार महत्वपूर्ण वाक्य रेखांकित करो।*

युद्ध क्षेत्र में राजा अपने सामन्तों के साथ

## भेंट और सेना की सेवा

सामन्त बनने पर हारे हुए राजा को और भी कई शर्तें माननी पड़ती थीं। उसे अधिपति राजा के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए उसके दरबार में समय-समय पर मूल्यवान भेंट भेजनी पड़ती थी। मौके-मौके पर वह खुद अधिपति राजा के दरबार में हाज़िर होता था।

सामन्त राजा का यह कर्त्तव्य बनता था कि जब भी अधिपति राजा मांग करे तब उसे सेवा में हाजिर होना पड़ेगा। खास कर जब अधिपति राजा कोई युद्ध लड़ रहा हो तो वह अपने सामन्त को संदेश भेज सकता था कि आप अपनी सेना ले कर मेरे लिए लड़ने आइए। सामन्त राजा अपनी सेना ले कर अधिपति के लिए लड़ने जाता था।

## राजा अजातशत्रु के समय और सन् 400 के बाद के समय में तुलना

सन् 400 से भी बहुत पहले के समय में जो राजा हुए थे- राजा अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त मौर्य आदि- वे जब युद्ध में किसी राजा को हराते थे तो उसे राज्य लौटा कर सामन्त नहीं बनाते थे। वे हारे हुए राजा को हटा देते थे और उसके राज्य को अपने राज्य में मिला लेते थे।

सन् 400 के बाद के समय में राजाओं के बीच व्यवहार बदल गया था। सन् 400 के बाद के समय में हारे हुए राजा को सामन्त बना दिया जाता था। विजयी राजा उसका राज्य अपने राज्य में मिलाता नहीं था।

## फायदे और नुक्सान की जांच

सामन्त बनाने की नीति से विजयी राजाओं को क्या मिलता था- यह तुमने पढ़ा। पर क्या सामन्त बनाने से विजयी राजा का कुछ नुक्सान भी होता था? वे क्या सोच कर सामन्त बनाने का फैसला करते थे? आओ यह बात समझने के लिए एक कहानी पढ़ें।

चलो हम मान लें कि हम चालुक्य साम्राज्य की राजधानी कल्याणी के राजमहल में पहुंच गये। वहां राजा का दरबार लगा हुआ था। चालुक्य राजा सिंहासन पर बैठा था। उसके दोनों ओर उसके प्रमुख सामन्त, सेनापति, मंत्री और अधिकारी बैठे थे।

राज दरबार में चर्चा

राजसभा में इस विषय पर चर्चा चल रही थी कि कदंब वंश के राजा के साथ कैसा व्यवहार किया जाये। कुछ ही दिनों पहले चालुक्य राजा कदंब राजा को युद्ध में हराकर बंदी बनाकर लाया था।

सभा के कुछ लोग कह रहे थे कि कदंब राजा को मार डाल कर उसके राज्य को चालुक्य राज्य में मिला लेना चाहिए। जबकि दूसरों का कहना था कि कदंब राजा को सामन्त बनाकर उसे उसका राज्य वापिस कर देना चाहिए।

चालुक्य राज्य के एक कोषाध्यक्ष कह रहे थे, "महाराजाधिराज, मुझे लगता है कि हमें कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लेना चाहिये। कदंब राज्य में बहुत अच्छे संपन्न गांव हैं, वहां प्रसिद्ध बंदरगाह हैं जिनमें देश-विदेश के व्यापारी व्यापार करने आते हैं। इनसे खूब सारा कर वहां के राजा को मिलता है। अगर हम इस राज्य को अपने राज्य में मिला लें तो हमें यह सारा कर प्राप्त होगा। इससे हम बहुत धनी हो जायेंगे।"

एक सेनापति खड़े होकर बोले, "राजन् इस धन से हम खूब सारे घोड़े, और नए-नए शस्त्र खरीदकर अपनी सेना को और मज़बूत कर सकते हैं। इसलिए मुझे भी लगता है कि कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लेना चाहिये।"

अब एक उच्च अधिकारी उठकर बोले, "महाराज, मैं इनकी बात से सहमत नहीं हूँ। अगर हम कदंब राज्य को अपने राज्य में मिला लें तो हमें वहां का प्रशासन चलाने के लिए नए अधिकारियों को नियुक्त करना पड़ेगा। कर वसूली के लिए कर्मचारियों को नियुक्त करना पड़ेगा। वहां हमें अपनी सेना को भी तैनात करना पड़ेगा। ज़रा सोचिए इस सबसे कितना खर्चा बढ़ेगा। जो भी कर वहां के गांवों व बंदरगाहों से मिलता है, इसी खर्च में खप जायेगा।"

एक सामन्त खड़े होकर बोला, "महाराजाधिराज, यह बात सही है। अगर आप कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाएंगे तो आपका खर्च बढ़ेगा। पर अगर आप कदंब राजा को अपना सामन्त बना लें तो वह समय-समय पर आपको भेंट देता रहेगा। आपको बिना किसी खर्च के धन मिलता रहेगा।"

एक और मंत्री बोला, "राजन, एक खतरे पर ध्यान दीजिये। अगर हम कदंब राजा को सामन्त बनाकर उसका राज्य लौटा दें तो हो सकता है कि वह फिर से शक्तिशाली बनकर विद्रोह कर दे या फिर हमारे ही राज्य पर हमला कर दे। इसलिए उसे मार डाला जाए और उसका राज्य अपने राज्य में मिला लिया जाए।"

वह सामन्त फिर बोला, "नहीं महाराज, मुझे लगता है कि कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाने से हमारी

कठिनाईयां बढ़ जायेंगी। हम कदंब राजा को मार भी दें, फिर भी कदंब वंश तो बहुत बड़ा वंश है- पूरे कदंब राज्य में इस वंश के लोग फैले हैं। अगर हम उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लेंगे तो इस बात की पूरी संभावना है कि कदंब वंश के लोग राज्य वापिस पाने के लिए बगावत शुरू कर देंगे। फिर हमारा टिकना मुश्किल हो जायेगा। हमारी भलाई इसी में है कि हम कदंब राजा को न मारें, उसे उसका राज्य लौटा दें और समय-समय पर उससे भेंट लेते रहें। ज़रूरत पड़ने पर वह हमारी सैनिक सहायता भी करेगा। जब कभी युद्ध होगा तो कदंब राजा हमारी मदद के लिए अपनी सेना के साथ आयेगा।"

कोषाध्यक्ष फिर उठकर बोले, "महाराज, मुझे अभी भी लगता है कि हमें कदंब राज्य को अपने राज्य में मिलाना चाहिए। कदंब राजा को सामन्त बनाने पर हमें जो भेंट मिलेगी या सेना की सहायता मिलेगी वह कितनी सी होगी? इस ज़रा सी भेंट और सैनिक सहायता के बदले में हम कदंब राज्य का सारा धन अपने हाथ से जाने दे रहे हैं। सामन्तों का क्या भरोसा, आज एक तरफ हैं तो कल दूसरी तरफ।"

एक और सामन्त बोला, "महाराजाधिराज पूरे भारत वर्ष में आपका नाम प्रसिद्ध है- सब ओर लोग कहते हैं चालुक्य सम्राट एक महान राजा है- अनेक प्रमुख राजवंश उसकी महानता को स्वीकार करते हैं। अगर आप कदंब राजा को भी अपना सामन्त बना लेंगे तो आपका यश और बढ़ेगा। लोग कहेंगे पुराने और जाने माने कदंब वंश के राजा भी चालुक्य राजा के सामन्त हैं।" इस तरह वाद-विवाद, चर्चा चलती रही।

*अगर तुम चालुक्य राजा की जगह होते तो तुम क्या निर्णय लेते - सोचकर बताओ और साथ ही कारण भी चार वाक्यों में लिखो।*

सन् 400 से 1200 के बीच के समय में जो कई सारे छोटे बड़े राजा थे- वे सामन्त बनाने की नीति ही अपनाते थे।

## अभ्यास के प्रश्न

1. क) उपाधियों से कैसे पता चलता था कि कौन सा राजा सामन्त था और कौन सा राजा अधिपति था?
   ख) मान लो कि राजा जयसिंह राजा भरत सिंह का सामन्त था। इन दोनों के नाम के आगे इनकी उपाधियां लगाओ। और अब उन पर एक वाक्य बनाओ।
2. क) राजा अजातशत्रु के समय में एक राजा उससे हार गया। अजातशत्रु का उससे क्या रिश्ता रहा होगा?
   ख) सन् 800 की बात है। राजा गांगेय राजा भोज से हार गया। राजा भोज और गांगेय का रिश्ता कैसा होगा-वर्णन करो।
3. कहानी से तुम्हें दोनों बातें समझ में आईं। सामन्त बनाने के पक्ष वाली बातें और सामन्त बनाने के खिलाफ वाली बातें।

कहानी के आधार पर यह तालिका भरो-

| सामन्त बनाने में क्या फायदे थे | पर क्या नुकसान थे |
|---|---|
| 1. | |
| 2. | |
| 3. | |

| अपने राज्य में मिलाने से क्या-क्या फायदे होते | पर क्या नुकसान होते |
|---|---|
| 1. | |
| 2. | |
| 3. | |